

79 - सूरह नाज़िआत^[1]

سُورَةُ النَّازِعَاتِ

सूरह नाज़िआत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 46 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अन्नाज़िआत)) शब्द से हुआ है। जिस का अर्थ है: प्राण खींचने वाले फ़रिश्ते, इसी से इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 14 तक में प्रतिफल के दिन पर गवाही प्रस्तुत की गई है। फिर क़्यामत का चित्र दिखाते हुये उस का इन्कार करने वालों की आपत्ति की चर्चा की गई है।
- आयत 15 से 26 तक में फ़िरऔन के मूसा (अलैहिस्सलाम) की बात न मानने के शिक्षाप्रद परिणाम को बताया गया है जो प्रतिफल के होने का ऐतिहासिक प्रमाण है।

1 इस सूरह का विषय प्रलय तथा दोबारा उठाये जाने का वर्णन है। और इस में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी न मानने के दुष्परिणाम से सावधान किया गया है। और फ़रिश्तों के कार्यों की चर्चा कर के यह विश्वास दिलाया गया है कि प्रलय अवश्य आयेगी, और दूसरा जीवन हो कर रहेगा। यही फ़रिश्ते अल्लाह के आदेश से इस विश्व की व्यवस्था को ध्वस्त कर देंगे। यह कार्य जिसे असंभव समझा जा रहा है अल्लाह के लिये अति सरल है। एक क्षण में वह संसार को विलय कर देगा और दूसरे क्षण में, सहसा दूसरे संसार में स्वयं को जीवित पाओगे।

फ़िर फ़िरऔन की कथा का वर्णन कर के नबियों (ईश दूतों) को न मानने का दुष्परिणाम बताया गया है जिस से शिक्षा लेनी चाहिये।

27 से 33 तक परलोक तथा दोबारा उठाये जाने का वर्णन है।

34 से 41 तक बताया गया है कि परलोक के स्थायी जीवन का निर्णय इस आधार पर होगा कि किस ने आज्ञा का उल्लंघन किया है। और माया मोह को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया, तथा किस ने अपने पालनहार के सामने खड़े होने का भय किया। और मनमानी करने से बचा। यह समय अवश्य आना है। अब जिस के जो मन में आये करें। जो इसी संसार को सब कुछ समझते थे यह अनुभव करेंगे कि वह संसार में मात्र पल भर ही रहे, उस समय समझ में आयेगा कि इस पल भर के सुख के लिये उस ने सदा के लिये अपने भविष्य का विनाश कर लिया।

- आयत 34 से 41 तक में क़्यामत के दिन अवैज्ञाकारियों की दुर्दशा और आज्ञाकारियों के उत्तम परिणाम को दिखाया गया है।
- अन्त में क़्यामत के नकारने वालों का जवाब दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- | | |
|--|---|
| 1. शपथ है उन फ़रिश्तों की जो डूब कर (प्राण) निकालते हैं! | وَالْبُرْعَتِ عُرْفًا ۝ |
| 2. और जो सरलता से (प्राण) निकालते हैं। | وَاللَّشَّطِ نَسْطًا ۝ |
| 3. और जो तैरते रहते हैं। | وَالشَّحِطِ سَبْطًا ۝ |
| 4. फिर जो आगे निकल जाते हैं। | فَالشَّيْقَتِ سَبْقًا ۝ |
| 5. फिर जो कार्य की व्यवस्था करते हैं ^[1] | فَالْمُدَبِّرَاتِ أَمْرًا ۝ |
| 6. जिस दिन धरती काँपेगी। | يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝ |
| 7. जिस के पीछे ही दूसरी कम्प आ जायेगी। | تَتَّبِعَهَا الْثَّالِثَةُ ۝ |
| 8. उस दिन बहुत से दिल धड़क रहे होंगे। | قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ ۝ |
| 9. उन की आंखें झुकी होंगी। | أَبْصَارٌ مُّخَاشِعَةٌ ۝ |
| 10. वे कहते हैं कि क्या हम फिर पहली स्थिति में लाये जायेंगे? | يَقُولُونَ إِنَّا لَنَرُدُّوْنَ فِي الْحَافِرَةِ ۝ |
| 11. जब हम (भुरभुरी) (खोखली) स्थियाँ (हड्डियाँ) हो जायेंगे। | إِذَا لَمْ نَكُنْ عَظْمًا تَحِيْرَةً ۝ |
| 12. उन्होंने ने कहा: तब तो इस वापसी में क्षति है। | قَالُوا يٰٓأَيُّهَا لَيْتَ لَكَ إِذَا لَمْ تَكُنْ حَاسِرَةً ۝ |

1 (1-5) यहाँ से बताया गया है कि प्रलय का आरंभ भारी भूकम्प से होगा और दूसरे ही क्षण सब जीवित हो कर धरती के ऊपर होंगे।

13. बस वह एक झिड़की होगी।
14. तब वे अकस्मात धरती के ऊपर होंगे।
15. (हे नबी) क्या तुम को मूसा का समाचार पहुँचा?^[1]
16. जब पवित्र वादी "तुवा" में उसे उसके पालनहार ने पुकारा।
17. फिरऔन के पास जाओ वह विद्रोही हो गया है।
18. तथा उस से कहो कि क्या तुम पवित्र होना चाहोगे?
19. और मैं तुम्हें तुम्हारे पालनहार की सीधी राह दिखाऊँ तो तुम डरोगे?
20. फिर उस को सब से बड़ा चिन्ह (चमत्कार) दिखाया।
21. तो उस ने उसे झुठला दिया और बात न मानी।
22. फिर प्रयास करने लगा।
23. फिर लोगों को एकत्र किया फिर पुकारा।
24. और कहा: मैं तुम्हारा परम पालनहार हूँ
25. तो अल्लाह ने उसे संसार तथा परलोक की यातना में घेर लिया।
26. वास्तव में इस में उस के लिये शिक्षा है जो डरता है।

- فَأَنصَاهِی رَحْمَةً وَاجِدَةً ۝
 فَإِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝
 هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۝
 إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝
 إِذْ هَبَّ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝
 فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلَىٰ أَنْ تَزُولَ ۝
 وَاهْدِيكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْتَلَىٰ ۝
 فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ۝
 فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ۝
 ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ۝
 فَخَشَرَ فَنَادَىٰ ۝
 فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ۝
 فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْخَصْرِ وَالْأُولَىٰ ۝
 إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَخْتَلَىٰ ۝

1 (6-15) इन आयतों में प्रलय दिवस का चित्र पेश किया गया है। और काफिरों की अवस्था बतायी गई है कि वे उस दिन किस प्रकार अपने आप को एक खुले मैदान में पायेंगे।

27. क्या तुम को पैदा करना कठिन है
अथवा आकाश को, जिसे उस ने
बनाया।^[1]
28. उस की छत ऊँची की और चौरस
किया।
29. और उस की रात को अंधेरी, तथा
दिन को उजाला किया।
30. और इस के बाद धरती को फैलाया।
31. और उस से पानी और चारा
निकाला।
32. और पर्वतों को गाड़ दिया।
33. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लाभ
के लिये।
34. तो जब प्रलय आयेगी।^[2]
35. उस दिन इन्सान अपना करतूत याद
करेगा।^[3]
36. और देखने वाले के लिये नरक सामने
कर दी जायेगी।

أَلَمْ أَنْتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَوْ السَّمَاءُ بَنَاهَا ۖ

رَفَعَ سَنَكَهَا فَتَوَبَّعَهَا ۖ

وَأَعْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ۖ

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَاهَا ۖ

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْغَبَهَا ۖ

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ۖ

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۖ

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَةُ الْكُبْرَى ۖ

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعَى ۖ

وَبُورَّتِ الْجَحِيمُ لِمَنْ يَرَى ۖ

- 1 (16-27) यहाँ से प्रलय के होने और पुनः जीवित करने के तर्क आकाश तथा धरती की रचना से दिये जा रहे हैं कि: जिस शक्ति ने यह सब बनाया और तुम्हारे जीवन रक्षा की व्यवस्था की है, प्रलय करना और फिर सब को जीवित करना उस के लिये असंभव कैसे हो सकता है? तुम स्वयं विचार कर के निर्णय करो।
- 2 (28-34) "बड़ी आपदा" प्रलय को कहा गया है जो उस की घोर स्थिति का चित्रण है।
- 3 (35) यह प्रलय का तीसरा चरण होगा जब कि वह सामने होगी। उस दिन प्रत्येक व्यक्ति को अपने संसारिक कर्म याद आयेंगे और कर्मानुसार जिस ने सत्य धर्म की शिक्षा का पालन किया होगा उसे स्वर्ग का सुख मिलेगा और जिस ने सत्य धर्म और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नकारा और मनमानी धर्म और कर्म किया होगा वह नरक का स्थायी दुख भोगेगा।

37. तो जिस ने विद्रोह किया। فَأَمَّا مَنْ طَغَىٰ
38. और सांसारिक जीवन को प्राथमिकता दी। وَأَشْرَىٰ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا
39. तो नरक ही उस का आवास होगी। فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ
40. परन्तु जो अपने पालनहार की महानता से डरा तथा अपने आप को मनमानी करने से रोका। وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَعَىٰ النَّفْسَ الْهَوَىٰ
41. तो निश्चय ही उस का आवास स्वर्ग है। فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ
42. वे आप से प्रश्न करते हैं कि वह समय कब आयेगा?^[1] يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسِمُهَا
43. तुम उस की चर्चा में क्यों पड़े हो? فِيمَا أَنْتَ مِنْ ذِكْرِهَا
44. उस के होने के समय का ज्ञान तुम्हारे पालनहार के पास है। إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَمُهَا
45. तुम तो उसे सावधान करने के लिये हो जो उस से डरता है।^[2] إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرُ مَنِ يَخْشَاهَا
46. वह जिस दिन उस का दर्शन करेंगे उन्हें ऐसा लगेगा कि वह संसार में एक संध्या या उस के सबेरे से अधिक नहीं ठहरे। كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحًى

1 (42) काफ़िरोँ का यह प्रश्न समय जानने के लिये नहीं, बल्कि हंसी उड़ाने के लिये था।

2 (45) इस आयत में कहा गया है कि (हे नबी) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप का दायित्व मात्र उस दिन से सावधान करना है। धर्म बल पूर्वक मनवाने के लिये नहीं। जो नहीं मानेगा उसे स्वयं उस दिन समझ में आ जायेगा कि उस ने क्षण भर के सांसारिक जीवन के स्वर्थ के लिये अपना स्थायी सुख खो दिया। और उस समय पछतावे का कुछ लाभ नहीं होगा।